कर्णावती दर्पण

अंक - 3 वर्ष 2008-09

झूलती मीनारें, अहमदाबाद.

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II.
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009.

''गणतंत्र दिवस''-26 जनवरी, 2009 के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए
श्री राकेश कुमार शर्मा, आयुक्त एवं सलामी हेतू तैनात वर्दीधारी अधिकारी गण

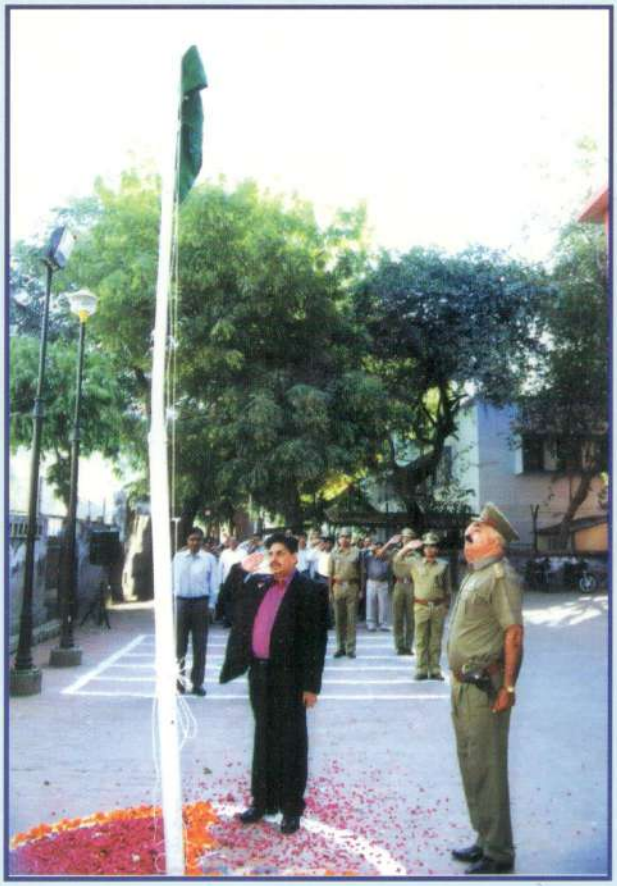

कर्णावती दर्पण

अंक - 3 विभागीय पत्रिका वर्ष : 2008-09

संरक्षक

श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा

मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक

श्री राकेश कुमार शर्मा

आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

परामर्शदाता

श्री बी. हरेराम, अपर आयुक्त

श्री पी. रॉयचौधुरी, अपर आयुक्त

संपादक

श्री प्र. डी. डावरा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-I

सहयोगी

श्री रमेश जे. क्रिश्चियन, अवर श्रेणी लिपिक

प्रकाशक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II

''सीमा शुल्क सदन'', नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं । इसके लिए संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे । किसी दूसरे की रचना को अपने नाम से भेजने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी इसके लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
01	शुभकामनाएँ	श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा	3
02	संपादक की कलम से	श्री राकेश कुमार शर्मा	4
03	संदेश	श्री बी. हरेराम	5
04	संदेश	श्री पी. रॉयचौधुरी	6
05	सम्पादकीय	श्री प्रताप डी. डावरा	7
06	सरस्वती वंदना		8
07	जीवन	श्री आर. ओ. जेटली	9
08	मँहगाई, हाय महँगाई !	श्रीमती पूजा एल. मीणा	9
09	अवलोकन - एक शक्ति	श्री संजय आर. शुक्ल	10
10	माँ - बाप	श्री जी. आर. दवे	12
11	मेरी जगह	श्री ओम प्रकाश शर्मा	14
12	चुटकुले	श्रीमती पूजा एल. मीणा	15
13	नारी के साथ ऐसा सलूक क्यों ?	श्री डी. आर. मीना	15
14	काम या कामचोरी	श्री ए. वी. जोषी	16
15	शुभ विचार	श्री रंजन सोखडीया	17
16	माँ	श्री देवभूषण मिश्रा	17
17	आज का सदचिंतन	श्री एम. सी. ब्रह्मभट्ट	18
18	अनमोल विचार	श्री देवभूषण मिश्रा	18
19	आध्यात्मिक अनुबंध	श्री एम. सी. ब्रह्मभट्ट	19
20	हिन्दी दिवस/सप्ताह का आयोजन - वर्ष-2008	संकलन	20
21	आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाएँ		
	(क) सरकारी कामकाज हिन्दी में क्यों करें ?	श्री देवभूषण मिश्रा	22
	(ख) वैश्विकरण के युग में हिन्दी का स्थान	श्री नीरज पाल	24
22	आइए हिन्दी में काम करें	संकलन	26

शुभकामनाएँ

गृह पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' का तृतीय अंक आपको सौंपते हुए मुझे असीम हर्ष की अनभूति हो रही है। मैं आपको तथा संपादक मण्डल को बधाई देती हूँ। साथ ही इस अंक से प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा एवं रचनात्मकता की मैं प्रशंसा करती हूँ।

हमारा विभाग भारत सरकार के लिए राजस्व वसूली जैसा महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है, जिससे प्राय: सभी उद्योग, व्यापारिक एवं व्यावसायिक संगठन जुड़े हुए है। हम इस पत्रिका के माध्यम से उन तक भी विभागीय कार्य-कलापों की जानकारी पहुँचाकर तथा उनमें कर्तव्य बोध जागृत कर देश के आर्थिक ढाँचे को मजबूती प्रदान कर सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि ''कर्णावती दर्पण'' हमारे आयुक्तालय का एक स्पष्ट एवं सटीक आईना है जो यहाँ के अधिकारियों / कर्मचारियों की लेखनी को अभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु प्रभावी भूमिका निभाएगी।

मैं पत्रिका के सतत सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूं।

विजय लक्ष्मी शर्मा
मुख्य आयुक्त

संपादक की कलम से

विभागीय हिन्दी पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो एक सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा का प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। एक स्वतत्र राष्ट्र की पहचान का दर्पण है उसकी राजभाषा का सम्मान और उसका पठन-पाठन। राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरुकता लाने तथा अधिकतर कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में करने के प्रति अभिरुचि पैदा करने में यह पत्रिका सहायक सिद्ध होगी, ऐसी मैं कामना करता हूँ।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति के लिए मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूँ।

राकेश कुमार शर्मा

आयुक्त,

संदेश

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II की विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के तृतीय अंक का प्रकाशन, सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का हिन्दी भाषा के प्रति लगाव व उसको प्रोत्साहन देने का उत्कृष्ट नमूना है।

जीवन की गति / क्रिया-कलापों को प्रतिबिंबित करने में दर्पण का जो महत्व है, उसे कोई नकार नहीं सकता। उसी तरह से यह पत्रिका भी एक दर्पण है, जिसमें विभाग के द्वारा समय-समय पर आयोजित सामाजिक कार्यालय एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों की कलात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को आईना मिलता है।

(बी. हरेराम)
अपर आयुक्त

संदेश

मुझे यह जानकर अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है, कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II की पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है ।

हिन्दी पत्रिका के माध्यम से विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियो की साहित्यिक प्रतिभा उजागर होती है और दैनिक कार्य हिन्दी में करने के प्रति रुचि जागृत होती है ।

हिन्दी भाषा हमारे स्वदेशी अभिमान का प्रतीक है एवं हमें अपनी संस्कृति का बोध कराती है । अत: हमें अपनी मानसिकता को हिन्दीमय बनाना जरुरी है । आशा है, यह पत्रिका इस उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी ।

पी. रॉयचौधुरी
अपर आयुक्त (का.व स.)

सम्पादकीय

विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' का आगामी अंक प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख है। हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने में हमारा ध्येय हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना, सभी वर्ग के अधिकारियों / कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करना एवं उनमें हिन्दी का प्रेम जगाना है।

तो आईए ! हम सभी यह संकल्प लें कि हम हिन्दी का अपने कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे ताकि उसे सही माईने में राजभाषा का सम्मान मिल सके।

''कर्णावती दर्पण'' के इस अंक में एक ओर जहाँ कहानी, लेख और कविताएँ पाठकों को आकर्षित करेंगी, वही कोर्यालय संबंधी विविध गतिविधियों का भी समावेश किया गया है।

पत्रिका को और उपगोयी/रोचक बनाने के लिए आपके विचार / सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रताप डी. डावरा
सहायक निदेशक (राजभाषा) - I

सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला

या शुभ्रवस्त्रावृत्ता

या वीणावर दण्डमण्डित करा

या श्वेत पद्मासना

या ब्रह्माच्युत शंकरः प्रभूतिभिः

देवैः सदावन्दिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती

निःशेष जाडयाङपहा ।

जीवन

जीवन एक लहर के समान है जिसमें उतार व चढ़ाव दोनों हैं, यह बात मैंने कई बार किताबों में पढ़ी है तथा लोगों के मुँह से भी सुनी है। परंतु निजी जीवन में मुझे न जाने क्यों ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानो जीवन एक लहर के समान न होकर एक चिकनी ढ़लान की तरह है, जिस पर मुझे ऊपर चढ़ने के लिए कहा गया है। कंधों पर बोझ लदा हुआ है, ऊपर चढ़ने के लिए जैसे ही कदम उठाता हूँ ढलान की चिकनी जमीन से पैरों की पकड़ कमजोर पड़ जाती हैं, कंधो के बोझ से दबाव और बढ़ता है और मैं पीछे की ओर फिसल जाता हूँ। कुछ देर रुकता हूँ, विश्वास का दामन एक बार फिर थाम लेता हूँ, हिम्मत जुटाकर कदम फिर आगे बढ़ाता हूँ, इस बार पैरों की पकड़ मजबूत है या नीचे की सतह कम चिकनी, इसका अनुमान नहीं लगा पाता हूँ। एक कदम आगे बढ़ जाता हूँ, यह प्रक्रिया यूंही निरंतर चलती रहती है। इस ढ़लान की जददोजहद से मैं थका तो नहीं, पर उकता जरुर गया हूँ, विश्वास भी कभी डगमगाने लगता है, हिम्मत भी कई बार साथ छोड़ती दिखाई पड़ती है। परंतु मेरे पास चढ़ने के लिए और कोई दबाव नहीं है, मुझे तो इसी ढलान पर ही चढ़ना होगा। इस ढलान पर मैं यह भी देख रहा हूँ कि कुछ लोग तेजी से ऊपर दौड़े चले जा रहे हैं, कुछ लोगों को उपर से रस्सी द्वारा खींचा जा रहा है, कुछ को नीचे से धक्का देकर ऊपर चढ़ाया जा रहा है। यह ढलान बहुत ऊँची है, नज़रे उठाकर देखने से अंतहीन ही प्रतीत होती है। इस ढलान के अंत मे क्या है, मैं नहीं जानता, नजरे ज्यादा उठाकर जानने की कोशिश में सिर के बल उल्टा गिरने का खतरा है ऐसा कहते हैं कि ढलान के अंत में सफलता है तथा नीचे असफलता, इसका प्रमाण किसी के पास नहीं है, क्योंकि अंत तक पहुँचकर कोई कुछ बताता नहीं है, या फिर वो अंत तक पहुँचा ही नहीं ! इस ढलान के बीच में जो घट रहा है वह क्या है ? क्या वही जीवन है ? यदि है, तो उसका महत्व सफलता और असफलता से कम क्यों है ?

आर. ओ. जेटली

अधीक्षक

मँहगाई, हाय महँगाई !

एक था परिवार, जिसमें रहते सैंकड़ों लोग।
साथ में रहते, साथ में खाते, स्वस्थ हो या हो रोग॥

हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई ने बनाया ये परिवार।
जिसमें सदैव खुशी से मनाते हर त्यौहार॥

छोटे-छोटे मन-मुटाव, तो होता घर का हिस्सा।
उसके बीच भी रहते ये सब, सुनाते अपना किस्सा॥

इस हँसते-खेलते परिवार को जाने लगी किसकी नज़र ?
आया एक तूफान जिसने ढ़ाया एक कहर॥

अब तो घर का चूल्हा भी जलने से डरता है।
घर का हर सदस्य बच-बच कर क्यों चलता है ?

अब नक्शा यहाँ ज़रा सा कुछ गया है बदल।
हवा में उड़ने वाले, क्यों चलने लगे हैं पैदल ?

तेल, चूल्हे, पानी ने बदले अपने रंग।
परिवार को मुश्किल लगे यह नया जीने का ढंग॥

इस आधुनिक परिवार को हम कहते हैं भारत, भाई।
सब इतना कठिन हो गया, क्या इतनी बड़ी है महँगाई ?

- पूजा एल. मीणा

सुपुत्री एल. आर. मीणा, अधीक्षक

'अवलोकन' - एक शक्ति

किसी ने कहा है कि :- "आज के इस आधुनिक युग में
इंसान अपनी जगह से हिले बिना भी चलता है,
वस्तु का अवलोकन किए बिना देखता है,
कुछ भी बोले बिना बात करता है, और
हम सब बिना काम के ही व्यस्त हैं"।

उक्त वाक्य हमारी आज की व्यस्तता का समर्थक सूचन करता है ! हमारा व्यवहार, कार्य और कार्य करने की पद्धति केवल दिखावा हो गयी है। ऐसे वक्त अवलोकन जैसा विषय हमारा न केवल अपनी ओर पर समाज, परिवार एवं पूरे राष्ट्र के प्रति हमारे नज़रिए को बदलने का प्रयास होगा।

हम सामान्यत: देखने और अवलोकन करने के बीच में फर्क नहीं करते हैं। सिर्फ किसी चीज की तरफ नजर करना, यह देखना होता है, मगर किसी चीज को गहराई से परखना वह अवलोकन कहलाता है। आँखों का काम देखना है, जबकि बुद्धि का काम अवलोकन करना है। यदि हम गणेशजी की मूर्ति की ओर देखते हैं तो उन्हें हम सिर्फ भगवान मानकर सिर झुकाते हैं। मगर इसी गणेशजी की प्रतिमा का अवलोकन किया जाए तो गणपति यानि गुणों का पति अर्थात् एक नेता के गुण-दर्शन इनमें होते हैं। जैसे कि गणेशजी के बड़े कान क्यों ? वे सभी की सुनते हैं - बहुश्रुत हैं उनकी आँखें छोटी क्यों हैं ? छोटी आँखें दूरदर्शी होती हैं, भविष्य को देखतीं है। इस तरह एक सच्चे नेता में एक जबरदस्त अवलोकन सामर्थ्य होना चाहिए !

अवलोकन के व्यावहारिक उपयोग :-

1. जितना ज्यादा अवलोकन, उतनी स्मरण शक्ति ज्यादा : (More Memory)
2. दर्दी की चलने की, बोलने की एवं बैठने की रीति से उनके रोगों का परीक्षण सहज हो जाता है।
3. अवलोकन से ज्ञान में वृद्धि होती है।
4. गुन्हगारों को पकड़ने के लिए भी अवलोकन शक्ति उपयोगी है। उनकी चाल-ढ़ाल से एवं चेहरे के हाव-भाव से ही वे अक्सर पकड़े जाते हैं।
5. हमारे शरीर का सूक्ष्म अवलोकन हमें बड़ी बीमारी से बचाता है।
6. आज अच्छे प्रशासन के लिए अवलोकन सामर्थ्य होना बहुत जरुरी है।
7. बच्चों के शिक्षण की शुरुआत अवलोकन से ही होती है।
8. इंसान के व्यक्तित्व का ख्याल अवलोकन से ही होता है।

अवलोकन शक्ति कैसे बनाएँ :-

किसी भी चीज या व्यक्ति को देखने के बाद, जो देखा उसका वर्णन एवं चित्र अपने मन में उपस्थित करें। उनको चलने का, बोलने का ढंग याद करने का प्रयत्न करें, अर्थात् बुद्धि के अंदर छिपी प्रतिभा शक्ति जागृत करें।

1. पूरे दिन में कुछ समय एकाग्रता के लिए रखें। ध्यान, मूर्ति पूजा इत्यादि एकाग्रता के प्रकार हैं।
2. जितना ज्ञान ज़्यादा, उतनी अवलोकन शक्ति ज्यादा। प्रभावी !
   "What your mind dosn't know, your eyes don't see".
3. कल्पना शक्ति जागृत करें और किसी भी बात को गहराई से तराशें तो यकीनन अवलोकन शक्ति बढ़ेगी !

अवलोकन शक्ति के प्रयोग / उपयोग :-

1. हम अपने जीवन का अवलोकन कर सकते हैं। हम कुछ साल पहले कहाँ थे और अब कहां हैं ? मैंने अपने जीवन में प्रगति की या अद्योगति .... । यह अवलोकन से ही पता चलता है।
2. हमारे साथ काम करने वाले लोगों की छोटी-छोटी अच्छी बातें ढूंढ़कर उन्हें प्रोत्साहित करें और बड़े से बड़ा दुर्गुण देखकर भी उसे अनदेखा करें और ऐसे दुर्गुण हमारे जीवन में न आएँ ऐसा प्रयत्न करें।
3. हम कभी भी किसी से मिलते हैं, किसी के घर जाते हैं तो अवलोकन से ही पता चलता है कि जिससे मिले / मिलना है, उसका प्रभाव कैसा है ? हमें मिलकर उन्हें खुशी हुई कि नहीं, इत्यादि अवलोकन से ही पता चलता है।
4. इंसान के अवलोकन से उसके रस और रुचि का पता चलता है। यदि उसे अपनी रुचि अनुसार काम दिया जाए तो वह सही और अच्छी तरह से काम कर सकता है।

आइए साथ मिलकर अपनी अवलोकन शक्ति बढ़ाएँ और अपने जीवन की एक अनोखी शक्ति का विकास करें।

- संजय आर. शुक्ल
निरीक्षक

विपत्तियां मनुष्य को न दुर्बल बनाती हैं न सबल, वे तो केवल यह प्रकट करती हैं कि वह क्या हैं।

- अज्ञात

माँ - बाप

ऊपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमाँ कहते हैं,
जहाँ में जिसका अंत नहीं, उसे माँ कहते हैं ॥

बचपन में गोद देने वाली को बुढापे में,
दगा देने वाला मत बनना.....

जिन बेटों के जन्म पर माँ-बाप ने हँसी-खुशी पेड़े बाँटे,
वहीं बेटे जवान होकर कानाफूँसी से
माँ - बाप को बाँटे ..... हाय ! कैसी करुणता ।

माँ पहले आँसू आते थे और तू याद आती थी ।
आज तू याद आती है, और आँसू आते हैं ।

माँ कैसी हो....." इतना पूछ, उसे मिल गया सब कुछ ।

मंगलसूत्र बेचकर भी तुम्हें बड़ा करने वाले माँ - बाप,
उन्हें ही घर से निकलाने वाले ऐ युवान !
तुम अपने जीवन में अमंगल शुरु कर रहे हो ।

माँ तुने तीर्थंकरों को जना है, संसार तेरे ही दम से बना है,
तू मेरी पूजा, मन्नत है मेरी, तेरे ही कदमों में जन्नत है मेरी .....

बंटवारे के समय घर की हर चीज पाने के लिए झगड़ा करने वाले बेटे,
दो चीजों के लिए उदार बनते हैं जिनका नाम है माँ - बाप .....

- मातृभाषा, मातृभूमि एवं माँ का कोई विकल्प नहीं ।

डेढ़ f्लो लौकी, डेढ़ घण्टे तक उठाने में तुम्हारे हाथ थक जाते हैं,
माँ को सताने से पहले इतना सोचो .....
तुम्हें नौ - नौं महीने उन्होंने पेट में कैसे उठाया होगा ?

जो मस्ती आँखों में है, वह मदिरालय में नहीं,
अमीरी दिल की कोई महालय में नहीं,
शीतलता पाने के लिए कहाँ - कहाँ भटकता है मानव !
जो माँ की गोद में है, वह हिमालय में नहीं. ।

बचपन के आठ साल तक जो माँ - बाप
तुम्हें अंगुली पकड़कर स्कूल ले आते थे,
उस माँ - बाप को बुढ़ापे के आठ साल तक सहारा देकर मंदिर ले जाना....
शायद तुम्हारा थोड़ा सा कर्ज़ उतर जाए ।

माँ - बाप को सोने से मत मढ़ो तो चलेगा, हीरे मत जड़ो तो चलेगा,
मगर उनके हृदय जले और अंतर आँसू बहाए, ये कैसे चलेगा ?

जब छोटा था, तब माँ की शय्या गीली रखता था,
अब बड़ा हुआ तो माँ की आँखे गीली रखता हूँ ।
हे पुत्र ! तझे अपनी माँ को गीलेपन में रखने की आदत सी हो गई है ।

माँ : बाप की आँखों मे दो बार आंसू आते हैं,
लड़की घर छोड़े तब एवं लड़का मुँह मोड़े तब ॥

माँ और क्षमा दोनों एक हैं क्योंकि माफ करने में दोनों नेक हैं ।

घर का नाम मातृछाया या पितृछाया हो,
पर उस पर माता-पिता की परछाई भी न पड़ने दे
तो उस घर का नाम पत्नीछाया रखना ज्यादा अच्छा होगा ॥

माँ - बाप की सच्ची विरासत - पैसा और प्रसाद नहीं बल्कि प्रमाणिकता और पवित्रता है ।

बचपन में जिसने तुम्हें पाला,
बुढ़ापे में उसको तुमने नहीं संभाला तो याद रखो.....
तुम्हारे भाग्य में भड़केगी ज्वाला ॥

माँ - बाप को वृद्धाश्रम में रखने वाले हे युवक ! तनिक सोच कि उन्होंने तुझे
अनाथ - आश्रम में नहीं रखा, तू उस भूल की सजा तो नहीं दे रहा है ?

जिस मुत्रे को माँ - बाप ने बोलना सिखाया था....
वह मुत्रा बड़ा होकर माँ - बाप को चुप रहना सिखाता है ।

घर में माँ को रुलाएँ,
मंदिर में माँ को चुनरी ओढ़ाएँ, याद रख.....
मंदिर की माँ, तुझसे खुश नहीं, खफा ज़रुर होगी ।

जिस दिन तुम्हारे कारण माँ - बाप की आँखों में आँसू आते हैं, याद रखना.....
उस दिन तुम्हारे द्वारा किया सारा धर्म, उन आँसूओं के साथ बह जाएगा ।

तुमने जब धरती पर पहली सांस ली, तब तुम्हारे माँ - बाप,
तुम्हारे पास थे, माता - पिता आखिरी साँस लें, तो तुम उनके साथ रहना .....

पत्नी पसंद से मिल सकती है, माँ पुण्य से ही मिलती है ।
पसंद से मिलनेवाली के लिए पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकराना ।

जिस माँ को पेट में पाँच बेटे भारी नहीं लगे थे, वह माँ,
आज बेटों के पांच फ्लैटेस भी भारी लग रही हैं ।
बीते जमाने का श्रवण का देश यही है । कौन मानेगा ?

संसार की सबसे बड़ी दो करुणता - माँ बिना घर, और घर बिना माँ ॥

प्रेम को साकार होने का मन हुआ, तब माँ का सृजन हुआ ।

जीवन के अंधेरे पथ में सूरज बनकर रोशनी करनेवाले,
माँ - बाप की जिंदगी में अंधकार मत फैलाना ।

- जी. आर. दवे
अधीक्षक

मेरी जगह

हर जगह भीड़ - भाड़ । हर जगह लाइन । एडवांस बुकिंग के बगैर न तो ट्रेन में जगह मिलती है, न थियेटर में, इस बात से मुझे बड़ी परेशानी होती है । वैसे भी मैं एकांत प्रिय हूँ । पिकनिक भी सूने स्थानों की ही पसंद करता हूँ, किन्तु भीड़ - भाड़ में रहना भी कभी - कभी मजबूरी बन जाता है ।

मेरी नौकरी रेवाड़ी में थी और घर दिल्ली में । शाम को जब ट्रेन दिल्ली पहुचती, चढ़ने वालें की बड़ी भीड़ होती, क्योंकि यह ट्रेन आगे अलीगढ़ जाती थी । चढ़ने और उतरने वालों के बीच कभी - कभी घमासान सा हो जाता । इससे बचने के लिए एक दिन मुझे एक तरकीब सूझी ।क्यों न मैं ट्रेन में ही बैठा रहूँ और खींचतान खत्म होने पर ही उतारुँ उतरनेवाले उतर गए । चढ़नेवाले ने अपनी-अपनी जगह ले ली । अब मैं उठने को ही था कि एक सज्जन बैठने की जगह ढूंढ़ते नजर आए । उम्र करीब सत्तर की होगी । सफेद कुर्ता - पायजामा और कँधेपर एक झोला । मुँह इतना पिचका हुआ था कि दाँत स्वतः दिखाई देते। लगता जैस मुस्कुरा रहे हों.। मैं भी उनकी और देखकर मुस्कुरा दिया । उन्हें मेरी जगह पर बैठने का इशारा करके मै ट्रेन से उतर गया । उस दिन मुझे एक अजीब - सी खुशी महसूस हुई । फिर तो यह मेरा नित्यक्रम बन गया । हर रोज किसी न किसी को जगह देकर ही उतरता । अब तो किसी को भी जगह देना या दिलवाना मुझे एक बड़ा अच्छा सोश्यल वर्क लगने लगा । मेरे एक मित्र दिल्ली ट्रांसफर होकर आए, उन्हें किराए पर मकान दिलवाया । एक रिश्तेदार के बच्चे को स्कूल में एडमीशन दिलवाया, लेकिन एक बात का मुझे सदा अफसोस रहता कि कभी कोई मेरी जगह क्यों नहीं रखता । समय यूं ही गुजरता गया ।

एक बार मैं सिनेमा देखने गया । गर्मी की छुट्टियाँ थीं, पत्नी और बच्चे ससुराल में थे । थियेटर के बाहर दो टिकट लिए मैं अपने किसी दोस्त का इंतजार कर रहा था । तभी उसका फोन आया, "एक बिजनेस कॉन्फ्रेस है, तुम्हारे लिए भी उपयोगी है । टिकटें किसी को दे दो, पिक्चर फिर देख लेंगे । मेरा मन पिक्चर देखने का था । मैने बेमन से कहा - ठीक है, देखता हूँ । पिक्चर शुरु होने में अभी देर थी । अकेला पिक्चर देखूं या फिर कॉन्फ्रेस में जाऊँ, इसी उधेड़बुन में सामने के ठेले पर चला गया । पानी का छिड़काव किया हुआ था । बैठने के लिए स्टूल रखे थे । मैं गन्ने का रस पीने बैठ गया । पहली चुस्की ली ही थी कि ट्रेन वाले वही सफेदपोश एक सज्जन के साथ मेरे सामने प्रकट हो गए । अपने दांतों को दिखाते हुए, मेरे हाथ की टिकटों की ओर इशारा करते हुए बोले - एकस्ट्रा है क्या ? मैं मुस्कुरा दिया । उन्होंने शायद मुझे पहचाना नहीं अब सोचने की गुंजाइश नहीं थी । मैने दोनों टिकट दे दिए और पैसे लेकर चल पड़ा ।

कॉन्फ्रेंस पूरी होने पर हम दोनों हॉल से बाहर निकले । अफरा-तफरी सी नजर आई । पता चला उसी सिनेमा हॉल में कोई ब्लॉस्ट हुआ है । काफी लोग मारे गए हैं और सैंकड़ो जख्मी हुए हैं हम दोनों सुन्न हो गए । मैने अपने दोस्त का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा - "चलो, वहाँ चलते हैं । वहाँ जाकर हमने काफी खोज - बीन की किंतु उन दोनों के बारे में हमें कुछ पता नहीं चल पाया ।

- ओम प्रकाश शर्मा

अधीक्षक

चुटकुले

अध्यापक : ऐसी चीजों के नाम बताओं जो हमें अमेरिका में मिलती हैं ?
छात्र : पता नहीं !
अध्यापक : तुम्हे पता होना चाहिए । अच्छा बताओ तुम्हें शक्कर कहाँ से मिलती
छात्र : वो तो हमें पड़ोसी के घर से मिलती है ।

*****

अच्छी, बुरी और बहुत बुरी खबर ।
अच्छी : डाकिया जल्दी आ गया ।
बुरी : उसके हाथ में AK 47 है ।
बहुत बुरी : उसे दिवाली का बोनस नहीं मिला है ।

*****

एक भीड़ भरी बस में, एक आदमी की नजर दूसरे बैठे हुए आदमी पर पड़ी ।
दूसरा आदमी आँख बंद कर बैठा था ।
पहला : क्या हुआ ? आपकी तबीयत खराब है ?
दूसरा : नहीं मैं ठीक हूँ । बस, मैं बस में बूढ़ी औरतों को खड़े नहीं देख सकता ।

- पूजा एल. मीणा
सुपुत्री एल. आर. मीणा, अधीक्षक

नारी के साथ ऐसा सलूक क्यों ?

भारत वर्ष में यह कहा जाता है कि 'यत्र पूजयन्ते नारीस्तु, रमन्ते तत्र देवता' जिस समाज में नारी की पूजा होती है, देवता वहाँ निवास करते हैं ।

लेकिन हम हमारे समाज में देखते हैं कि नारी का गर्भ परीक्षण करवाया जाता है, यदि गर्भ में लड़की हुई तो उसे माँ के पेट में ही मरवा दिया जाता है । क्या यही सलूक करता है, हमारा समाज नारी के साथ ।

आजकल हम अखबारों में आए दिन पढ़ते हैं कि "Save Girl Child", क्योंकि हम नारी जाति को इस दुनिया में आने के पहले ही खत्म कर देते हैं ।

आज के जमाने में नारी चाहे बेचारी विधवा हो, परित्यक्ता हो या अविवाहित हो, उस पर अपना समाज ऐसी नजर रखता है ; ऐसी नजर तो अपनी औलाद पर भी नहीं रखी जाती । वह कहां जाती है, कब आती है किससे बात करती है और क्यों करती है और उसके चाल-चलन पर उंगली उठाई जाती है, क्या उसका आना-जाना और किसी से बात करना भी एक गुनाह है ?

हम आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं कि आज दहेज की वजह से एक औरत ने आत्म हत्या कर ली है । दहेज को लेकर हमारे समाज में नारी को जो प्रताड़ना दी जाती है, उसका तो वर्णन भी नहीं किया जा सकता है । यही हमारा समाज नारी के साथ ऐसा सलूक क्यों करता है, इसका कोई उपाय नहीं है ? सरकार नारी उत्थान के लिए क्या नहीं करती है, लेकिन जब तक समाज नारी के साथ हो रहे अत्याचार के बारे में कुछ पहल नहीं करेगा, तब तक नारी ऐसी ही समाज की प्रताड़नाओं का शिकार होती रहेगी।

- डी. आर. मीना
अधीक्षक

काम या कामचोरी

काम या कामचोरी ये दो शब्द बहुत ही छोटे हैं परंतु इन शब्दों की अहमियत बहुत बड़ी है । काम यानि कुछ करना और उसका फल पाना । कामचोरी यानि काम न करके भी फल पाना । जो व्यक्ति इसके सही अर्थ को समझता है वह अपने जीवन में बहुत सी तरक्की कर पाता हैं ।

हमारे जीवन में काम का बहुत ही महत्व है और काम करके ही कुछ प्राप्त करना चाहिए । बालक जब जन्म लेता है, बचपन में खेलता है यह उसके लिए एक प्रकार का काम है । वह पढ़ता है, यह भी एक काम ही है । बड़ा होकर अपने जीवन निर्वाह के लिए वह कोई नौकरी या व्यवसाय ढूंढ़ता/करता है, यह भी उसके लिए बड़ा महत्वपूर्ण काम हैं। व्यक्ति को अपने जीवन निर्वाह के लिए कोई न कोई काम करना पड़ता है । गरीब या अनपढ़ व्यक्ति जो अच्छी नौकरी नहीं ढूँढ़ सकते, वे छोटी सी मजदूरी करके या फिर भीख माँगकर अपना और अपने परिवार का गुजारा करते हैं । क्या करें आखिर इस अमूल्य जीवन को तो जीना ही है ।

कई बार अखबार में यह पढ़ा है कि व्यक्ति अपने कार्यालय में अपना काम निष्ठापूर्वक करता है और उसके अपने काम का मुआवजा अपनी नौकरी में पदौन्नति देकर कार्यालय उसकी सराहना करता है । कई व्यक्ति काम नहीं करते हैं और मुफ्त में वेतन लेते हैं । कार्यालय मे यदि उसको कुछ काम दे दिया जाता है तो वह काम नहीं करने की इच्छा दर्शाता है । यह इच्छा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में होती है । कई बार काम में देरी करके कार्यालय के जिम्मेदार अधिकारी को तकलीफ में डाल देते हैं । यह और कुछ नहीं परंतु कामचोरी ही है । कामचोरी करना एक बहुत ही बुरी बात है । यह जानते हुए भी लोग कामचोरी करते हैं । उसके बाद उन पर अनुशासनिक कार्यवाही की जाती है । यह कामचोरी का ही फल है एक कहावत के अनुसार जैसा काम करोगे वैसा फल पाओगे । अच्छे काम का फल या नतीजा अच्छा ही होता है और बुरे काम का बुरा फल मिलता है ।

मनुष्य को अपने जीवन में हमेशा अच्छा काम करना चाहिए । भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि - तू अपना काम कर, फल की अपेक्षा या आशा मत रख । किसी की मदद करना या उसके काम में हाथ बटाना, यह भी एक अच्छा काम है । अंधे को रास्ता दिखाना, यह हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। यह भी एक अच्छा काम है ।

यह सब कुछ जानते हुए भी व्यक्ति अच्छे काम के बारे में नहीं सोचता है वह अपनी मर्जी के अनुसार काम करता है और दूसरे लोगों को तकलीफ में डालता है । यह मनुष्य जीवन या मानव जीवन का स्वभाव है । हम हर व्यक्ति का स्वभाव समझ नहीं सकते केवल हम उसे समझा सकते हैं । आगे उसका नसीब हमें जीवन में काम करके ही अपने जीवन को अच्छी तरह से जीना चाहिए काम करने से मनुष्य या व्यक्ति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है । अवसाद की कोई जगह नहीं होती है । कामकाजी व्यक्ति की अच्छे लोग प्रशंसा करते हैं और कामचोर लोगों की निन्दा ।

कामचोर व्यक्ति कभी भी अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर भी जानता है कि यह कामचोर है। उसे क्यों आशीर्वाद दें या फल दें । फिर भी, ईश्वर उसको फल तो देता ही है परंतु उसके काम जैसा । ईश्वर सर्वव्यापक है, इसलिए वह सब का ध्यान रखता है ।

तुलसीकृत रामायण में कहा गया है कि -

"राम झरुखे बैठ के सबका भुजरा देख,
जैसे जिसकी चाकरी वैसा उसको देत ।"

अर्थात् भगवान राम आकाश में बैठकर सबका कार्य देखते हैं और जिसने जैसा काम किया है वैसा उसको फल देते हैं इसलिए जैसा काम करेंगे वैसा फल मिलेगा । जीवन में काम करो परंतु काम की चोरी मत करो या काम बुरा मत करो बुरा मत सोचो एवं बुरा मत देखो क्योकि ईश्वर सर्वव्यापक है, वह सबको देखता रहता है ।

- श्री ए. वी. जोषी
प्रशासन अधिकारी

शुभ विचार

भला किसी का न कर सको तो,
बुरा किसी का मत करना ।
पुष्प नहीं बन सकते तो,
काँटे बनकर मत रहना ।
ना ही कभी शैतान बनो तुम,
ना ही कभी हैवान बनो ।
घर किसी का बसा न सको तो,
झोपडियाँ न जला देना ।
महरम- पट्टी न लगा सको तो,
नमक का छिड़काव मत करना ।
लूट सको तो प्यार लूट लो,
अहं का टकराव मत करना ।
सदाचार की माला जप कर,
मानव देह का कल्याण करना ।
बन न सको भगवान अगर तुम,
कम....से....कम इंसान जरुर बनना ।

- रंजन सोखडीया
पत्नी : वि. एस. सोखडिया
अधीक्षक

माँ

तेरी चरणों में शीश नवा करके तुझको सौ बार नमन,
तेरी ममता की गाथा से है, गुंजित ये धरती, ये गगन
इस सृष्टि के आदि से ही होता आया तेरा पूजन,
हे माँ ! तू ही शक्ति हमारी, तू ही हम सब का भगवन ।

ईश्वर प्रदत्त अनमोल एक प्यारा सा उपहार है तू,
हम सब प्यारे बच्चों की खुशियों का संसार है तू ।
हमें खिलाती गोद में अपने, करती कितना प्यार है तू,
ऐ माँ ! प्रेम की सच्ची सूरत और सच्चा आकार है तू ।

यदि देखना हो ईश्वर को देखें तेरी सूरत हम,
तू ही बस दिखती है माँ, जब देखें प्रभु की मूरत हम ।
तेरा जीवन खुशियों से भर दें, भूल के अपनी जरुरत हम,
तेरे लिए मर मिटने को तत्पर हर मुहूरत हम ।

है जग से बस यही प्रार्थना, सब माँ का सत्कार करें,
उसकी इच्छाओं को समझें, उसको सदा ही प्यार करें ।
नहीं कभी उसका दिल तोड़े न उसके हृदयपर वार करें,
मिले मौका माँ की सेवा का यही कामना सौ बार करें ।

- देवभूषण मिश्रा
कर सहायक

आज का सदचिंतन

मित्रों ! चंद्रगुप्त जब विश्व विजय की योजना सुनकर सकपकाने लगा तो चाणक्य ने कहा - ''तुम्हारी दासी पुत्र वाली दशा को मैं समझता हूँ । उससे ऊपर उठो और चाणक्य के वरद पुत्र जैसी भूमिका निभाओ। विजय प्राप्त करने की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं, मेरी है'' ।

शिवाजी जब अपने सैन्य बल को देखते हुए असमंजस में थे कि इतनी बड़ी लडाई कैसे लड़ी जा सकेगी तो समर्थ रामदास ने उन्हें भवानी के हाथों अक्षय तलवार दिलाई थी और कहा था तुम छत्रपति हो गए। पराजय की बात ही मत सोचो।

राम लक्ष्मण को विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के बहाने बला और अतिबला का कौशल सिखाने ले गये थे ताकि वे युद्ध लड़ सकें । असुरता के समापन और राम राज्य के रुप में 'सतयुग की वापसी' - सम्भव कर सकें ।

महाभारत में लड़ाई का निश्चय सुनकर अर्जुन सकपका गया था और कहने लगा कि मैं अपने गुजारे के लिए कुछ भी कर लूँगा, फिर हे केशव ! आप इस घोर युद्ध में मुझे नियोजित क्यों कर रहे हैं ? इसके उत्तर में भगवान ने एक ही बात कही थी कि - इन कौरवों को तो मैंने पहले से ही मारकर रख दिया है। तुम्हें यदि श्रेय लेना है तो आगे आओ, अन्यथा तुम्हारे सहयोग के बिना भी यह सब हो जाएगा, जो होने वाला है । घाटे में तू ही रहेगा । श्रेय गँवा बैठेगा और उस गौरव से भी वंचित रहेगा जो विजेता और राज - सिंहासन के रुप में मिलता है । अर्जुन ने वस्तु स्थिति समझी और कहने लगा - करिष्ये वचनं तव'' अर्थात् आपका आदेश मानूँगा ।

ऐसी ही हिचकिचाहट हनुमान, अंगद, नल-नील आदि की होती तो वे अपनी निजी शक्ति के बल पर किसी प्रकार जीवित तो रहते, पर उस अक्षय कीर्ति से वंचित ही बने रहते जो उन्हें अन्त तक मिलनेवाली है ।

- एम. सी. ब्रह्मभट्ट
कर सहायक

अनमोल विचार

1. स्वयं को दुर्बल समझने की भावना वास्तव में सच नहीं होती । यह तो मन की ऐसी बीमारी है, जिसके भयंकर परिणाम होते हैं । हमें अपनी शक्ति का पता नहीं है, हम स्वयं को तोले बिना यह समझ लेते हैं कि हम शक्तिहीन हैं बदकिस्मत हैं।
2. अव्यक्त भावनाओं की कोई कीमत नहीं होती, यदि आपके मन में कुछ अच्छी भावनाएं हैं तो उन्हें व्यक्त करें ।
3. वास्तविक संपन्नता हमारे भीतर विद्यमान होती है, परमात्मा हमारा सहभागी और मार्गदर्शक है, जिसका उस पर विश्वास है, वह कभी दरिद्र नहीं रह सकता ।
4. कर्म अथवा श्रम की महानता अपार है । उससे नेत्रों में ज्योति और मुख - मण्डल पर तेज आता है, रक्त शुद्ध होता है और विचार निर्मल होते हैं ।
5. वह व्यक्ति सफलता की आशा भला कैसे कर सकता है, जो अपने भावि कल पर आज का बोझ लाद देता है अथवा जो अपने भविष्य को आज के काम का ऋणी बनता है ।
6. अनिश्चय, संशय और बार - बार सोचने के बजाय काम करते हुए हजार गलतियां करना बेहतर है।
7. संशय में जीने वाला व्यक्ति सदा दूसरों के इशारों पर नाचता रहता है । वह कभी स्वतंत्र हो ही नहीं सकता । वह विरोधी परिस्थितियों का दास होता है ।
8. कभी स्पष्टीकरण मत दीजिए क्योंकि आपके दोस्तों को इसकी जरूरत ही नहीं और आपके शत्रु तो आपका विश्वास नही करेंगे।
9. यदि हम कुछ करें और हमारी प्रशंसा हो तो कोई बात नहीं । मुश्किल तो तब है जब हम प्रशंसा पाने के लिए कुछ करते हैं।

संकलनकर्ता - देवभूषण मिश्रा
कर सहायक

आध्यात्मिक अनुबंध

भगवान ने इस दुनिया में इंसान को बनाया । जब नौ महीने तक इंसान का बच्चा, उसकी मां के पेट में होता है; तब वह जीव भगवान को याद करता है और उन नौ महीनों तक हर एक पल, एक - एक सेकंड प्रभु को याद करता रहता है और वचन देता है कि - हे प्रभु मैं तेरा भजन करुंगा और इस जन्म में कोई बेइमानी नहीं करुँगा, भूखे - नंगों को कपड़े दूँगा और राम-रोटी का सदाव्रत चलाउँगा । प्रभु, मुझे इस मांस, रक्त एवं हड्डी के नर्क से बाहर निकालो, मैं आपको नहीं भूलूंगा । इस मानव शरीर में ही स्वर्ग और नर्क है । जन्म से पहले जीव गर्भ में प्रभु को 100% धार्मिक जीवन जीने का वचन देता है और जो कोई कर्म करुँगा, वह सिर्फ प्रभु के साये में ही करुंगा और मेरी पूरी जिन्दगी आपके चरणों की सेवा में और जनसेवा में, गरीब - दुखियों की सेवा में लगा दूंगा । मुझे इस नर्क से बाहर निकालो, माँ के पेट में बच्चा मल - मूत्र में पड़ा - पड़ा बड़ा होता है, और दुनिया में आने के बाद में अच्छा कर्म करुँगा, ऐसा वचन देता है और नौ महीने की नर्क की यातना भोगने के बाद उस जीव का जन्म होता है।

जन्म होने के बाद वह जीव भगवान को भूल जाता है, बुरा कर्म करता है, बेइमानी करता है, भगवान को उसने वचन दियाथा वह इस मायाजाल भरी दुनिया में आने के बाद तुझे नहीं भूलूंगा परन्तु बेकार, इस रंगीली दुनिया में वह जीव भूल-भूलैया में फँस जाता है और एक अमूल्य मानव जन्म खो देता है ।

बाद में, संतों - महंतो, साधू और बड़े-बड़े विद्वानों के मत के अनुसार और शास्त्रों के मतानुसार दुबारा जन्म कर्मों के अनुसार मिलता है । जैसे 84 लाख योनियाँ हैं तो भगवान के अनुसार वह जीव को किसी भी योनी में डाल देता है।

उदाहरण रुप

बहुत खाने वाले - हाथी का जन्म
बहुत सोने वाले - रीछ (भालू) का जन्म
बहुत भोग भोगने वाले - कबूतर का जन्म
कबूतर दिन में पच्चीस बार भोग भोगता है ।
बहुत कामवासना में जाने वाले - बकरे का जन्म
हजारों बकरी के बीच में घूमता है और बकरीईद के
दिन कट जाता है, उसकी बलि चढ़ाई जाती है ।

साखी -

बोए पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होए !!!

इसलिए इंसान का जन्म प्रभु के गुणगान और उनकी भक्ति के लिए हुआ है । प्रभु ने गीता में बताया है कि मेरी त्रिगुणी माया संसार में फैली हुई है - सत्वगुण, रजोगुण एवं तमोगुण

- तीन प्रकार के विचार हैं ।
- तीन प्रकार के भोजन हैं ।
- तीन प्रकार की लक्ष्मी हैं ।
- तीन प्रकार का जीवन हैं ।

इंसान जिस प्रकार से जीवन जीना चाहता है, वह जी सकता है । प्रभु को पाने के लिए, इंसान का जन्म ही श्रेष्ठ है । उस जन्म में बुद्धि ज्ञान मिला है, जो सदुपयोग में लगा है और प्रभु का भजन करके गुजारना चाहिए ।

यह महासागर से भी गहरा ज्ञान है, जो मानव जन्म में ही पा सकते हैं ।

- एम. सी. ब्रह्मभट्ट
कर सहायक

हिन्दी दिवस/सप्ताह का आयोजन - वर्ष 2008

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के कार्यालय ज्ञापन सं. 1/14034/2/87 रा.भा. (क-1) (परिपत्र सं. 2/87) के अनुसरण में पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस, 14 सितंबर, 2008 के अवसर पर इस आयुक्तालय में दिनांक 08-09-2008 से 12-09-2008 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया ।

2. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए :-

(क) कार्यालय का सारा काम हिन्दी में करने का प्रयास किया गया ।

(ख) हिन्दी सप्ताह के दौरान सभी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार संबंधी पताकाएँ, बैनर आदि प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए ।

(ग) इस संबंध में आयुक्तालय स्तर पर निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :

(1) हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता ।

(2) हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता ।

(3) हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता ।

(4) हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता ।

3. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले सफल प्रतियोगियों को क्रमशः रु 2000/-, रु 1500/-, रु 1250/- एवं दो सांत्वना रु 1000/- की दर से नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

4. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतियोगियों के नाम नीचे बताए अनुसार हैं :-

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्रम सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम व पदनाम सर्वश्री	प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त स्थान	पुरस्कार की राशि (रु)
1	देवभूषण मिश्रा, कर सहायक	प्रथम	रु 2,000/-
2	एम. एल. माहेश्वरी, निरीक्षक	द्वितीय	रु 1,500/-
3	निलेश भालचन्द्र कड़वे निरीक्षक	तृतीय	रु 1,250/-
4	संजय आर. शुक्ला, निरीक्षक	सांत्वना-I (क)	रु 1,000/-
5	अमित कुमार, कर सहायक	सांत्वना-I (ख)	रु 1,000/-
6	रमेश जे. क्रिश्चियन, अ.श्रे. लिपिक	सांत्वना-II	रु 1,000/-

आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाएँ

(क) सरकारी कामकाज हिन्दी में क्यों करें ?

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' अर्थात् हमारी अपनी ही भाषा के माध्यम से ही हमारी वास्तविक उन्नति हो सकती है । हमारा बौद्धिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास जितना अपनी भाषा के अर्थात् हमारी हिन्दी भाषा के माध्यम से हो सकता है, उतना किसी अन्य भाषा से कभी नहीं । यह तथ्य निस्संदेह स्वीकृत है । हम अपनी भाषा के माध्यम से गूढ़ से गूढ़ बातों को, तथ्यों को आसानी से आत्मसात कर सकते हैं । हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में बोली और समझी जाती है । अत: सरकारी कामकाज का हिन्दी में किया जाना वांछनीय ही नहीं अपितु सराहनीय भी हैं ।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधन किया गया है कि भारत सरकार के अंतर्गत एकमात्र राजकीय भाषा हिन्दी ही होगी । कार्यालयों से जारी गए सभी प्रपत्र, अनुदेश, अधिसूचना, अनुस्मारक आदि को हिन्दी भाषा में ही जारी किया जाएगा । पुन: अनुच्छेद 351 के तहत यह प्रावधान है कि हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा । अत: इन अनुच्छेदों के अनुसरण में संविधान के प्रति हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने संविधान का सम्मान करें और सरकारी कामकाज हिन्दी में करें। इसके अलावा अन्य भी बहुत सारे कारक हैं जो हमें प्रेरित करते हैं कि हमारा कामकाज हिन्दी भाषा के माध्यम से ही हो । हिन्दी पूरे राष्ट्र के द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है । किसी भी तरह की कोई सूचना यदि अंग्रेजी की जगह हिन्दी में जारी की जाती है तो व्यक्ति उसे आसानी से समझ एवं कार्यान्वित कर सकता है । साथ ही साथ हिन्दी में काम करने से हमारी भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि होता है । भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी होती है । इस परिप्रेक्ष्य में एक नजर सूचना का अधिकार अधिनियम पर भी डाली जाए तो हमें एक कारण और दिखता है कि हम हिन्दी भाषा को ही प्रयोग में लाएँ । सूचनाएँ जब संप्रेषित की जाती है तो उसे प्राप्त करने वाला व्यक्ति अंग्रेजी भाषा के कारण उस स्तर पर उनका प्रयोग नहीं कर पाता क्योंकि ऐसे बहुत से लोग हैं जो हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी का बोध ज्ञान कम रखते हैं । अत: आम जनता के साथ सरकार के संप्रेषण का माध्यम हिन्दी होना अधिक श्रेयस्कर है ।

14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को भारत सरकार ने राष्ट्रभाषा के रुप में सम्मानित किया । तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हम हिन्दी दिवस मनाते हैं और अपने आप में हिन्दी के सर्वोन्मुखी विकास की प्रतिज्ञा करते हैं । हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार तथा उसके उन्नयन का दायित्व भार गृह मंत्रालय को सौंपा गया है । हिन्दी भाषा के विकास एवं प्रगामी प्रयोग के लिए प्रत्येक सरकारी कार्यालय में एक राजभाषा अनुभाग का गठन किया जाता है और एक राजभाषा कार्यान्वयन समित की भी रचना की जाती है जो हिन्दी अर्थात् राजभाषा के प्रयोग तथा प्रोन्नति पर ध्यान देती है । राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास और व्यावहारिक प्रयोग के लिए संसदीय समिति का भी गठन किया जाता है जो समय - समय पर इसके कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त करती है ।

आज यह जानकर अपार हर्ष होता है कि पूरा विश्व हिन्दी भाषा और साहित्य को अपनाना चाहता है। चीन जैसे विशाल देश ने भारतवर्ष से 2500 हिन्दी शिक्षकों को अपने यहाँ नियुक्ति दी ताकि उनके यहाँ हिन्दी भाषा के ज्ञान का प्रकाश फैल सके। हाल ही में संपन्न हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र महासभा के महासचिव का हिन्दी में संबोधन करना हमारे लिये अत्यंत गर्व की बात है। हिन्दी को विदेशों में मिल रही पहचान से यह स्पष्ट होता है कि हमारी हिन्दी अब राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा का गौरव प्राप्त कर लेगी। भारत सरकार के निरंतर प्रयासों ने निश्चित रुप से सकारात्मक परिणाम दिए हैं और हिन्दी का प्रयोग बहुत ही विस्तृत स्तर पर होने लगा है। सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर पर हिन्दी का कामकाज आसान बनाने के लिए शुरु से ही बहुत प्रयास किए गए हैं और हाल ही में गृह मंत्रालय ने लीला नामक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का लोकार्पण किया है जिसके माध्यम से कम्प्यूटर पर कामकाज अपेक्षाकृत और आसान हो जाएगा। इन सब बातों को देखकर ऐसा लगता है कि अब हम अंग्रेजी के सहारे चलने वाले नहीं रहे। हमने हिन्दी को ही सर्वोपरि स्थान प्रदान कर दिया है। बस आवश्यकता है तो इस जज्बात को कायम रखने की और अपने सहयोगी, सहकर्मियों को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देने की कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में ही करें। हमें हिन्दी में कार्य करने के कारण ढूंढ़ने के नहीं अपितु हिन्दी में कार्य क्यों न करें के कारणों को ढूंढ़ने की आवश्यकता है हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा - अतः हमारा कामकाज केवल हिन्दी में ही हो, ऐसा हमारा संकल्प होना चाहिए। अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए कि लोगों को मन में हिन्दी में कार्य करने की अत्यधिक रुचि उत्पन्न हो जाए। कुछ ऐसे मौके आते हैं जहाँ हिन्दी अनुवाद की उपलब्धता न होने कारण हमें अंग्रेजी में कार्य करना पड़ता है। परंतु इस विषय पर प्रयास जारी है और बहुत शीघ्र सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। कार्यालय सहायिका जैसी उपयोगी पुस्तकें हमें उपलब्ध कराई जाती हैं, जिनसे हमें कार्य करने में बड़ी आसानी होती है। अतः हमें अब एकजुट होकर हमारी भाषा की उन्नति एवं प्रगामी प्रयोग का प्रयास करना चाहिए।

जय हिन्द, जय हिन्दी !!!

- देवभूषण मिश्रा
कर सहायक

"सभी भाषाएँ हमारी संस्कृति की धाराएँ हैं जो एक साथ मिलकर भारतीय चिंतन और परंपरा की विशाल नदी का निर्माण करती हैं। हमें अपनी इज़्ज़त, अपने राष्ट्रीय सम्मान के लिए अपनी राष्ट्रभाषा (हिन्दी) का प्रयोग करना चाहिए।"

-डॉ. शंकरदयाल शर्मा

(ख) वैश्विकरण के युग में हिन्दी का स्थान

भारतवर्ष 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र घोषित कर दिया गया । उसके बाद देश में अनेक समस्याएं आईं, उनमें से भाषा की समस्या भी एक प्रमुख समस्या थी । इसके समाधान के लिए देश के पूर्व - पश्चिम, उत्तर-दक्षिण विद्वानों और राजनेताओं दवारा गहन विचार - विमर्श करने के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया । आज 50 वर्ष से भी अधिक समय हो चुका है परन्तु राजनेताओं की ढुल-मुल नीतियाँ और अनिच्छा के कारण हिन्दी को भारत वर्ष में जो स्थान मिलना चाहिए, वह अभी तक नहीं मिल सका है जबकि विश्व में हिन्दी बोलने, समझने और पढ़ने वालों की संख्या बहुत बढ़ी है।

विश्व में हिन्दी के प्रचार - प्रसार की एक रोचक यात्रा कथा है । अंग्रेज, फ्रांसिसी और डच के लोग प्रशांत सागर के अपने औपनिवेशक दीपों में गन्ने की खेती करने के लिए परिश्रमी श्रमिकों का चयन करके ले जाने लगे, जिसमें अधिकतर श्रमिक उत्तर प्रदेश और बिहार के अवधि और भजोपुरी भाषा बोलने वाले थे जो हिन्दी समझते थे । उन देशों में उनके धर्म, आचार, संस्कृति आदि का दान उन्हें प्रदान करने के लिए सनातन धर्म, आर्य समाज और कुछ श्वेच्छिक संस्थाओं ने इन श्रमिकों को उनके संस्कार का ज्ञान उन्हें हिन्दी में प्रदान करना प्रारंभ कर दिया । विश्व में इसी तरह हिन्दी भाषा का बीजारोपण हो गया । ये अर्ध-शिक्षित, शिक्षित एवं अशिक्षित श्रमिक अवधि और भोजपुरी भाषा में हिन्दी भाषा को मिलाकर बोलने लगे जिससे भोजपुरी और अवधि भाषा पर बहुत प्रभाव पड़ा । यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि भोजपुरी और अवधि भाषा ने मिलकर विश्र में अपना आंचल फैलाया और हिन्दी के लिए स्थान बनाया। फलस्वरुप हिन्दी का विश्व में अपना सामाज्य स्थापित हो गया ।

विश्व हिन्दी भोजपुरी और अवधि भाषा की ऋणी है जिसके सहयोग और अपनत्व के बिना हिन्दी को विश्व स्तर पर इतना सम्मान मिल पाना असंभव था । हिन्दी भाषा अपनी सरलता - सहजता और सर्वव्यापकता के गुणों के कारण विश्व में एक बार स्थान पा लेने के बाद भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्वतः स्थान पाती चली गई । इसकी सहजता और सरलता के कारण विश्व समुदाय ने इसे बहुत अधिक सम्मान दिया। आज तक छः विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है जिसमें सबसे अधिक विदेशी प्रतिनिधियों की उपस्थिति विश्व हिन्दी की लोकप्रियता और शक्ति की परिचायक है । विश्व में हिन्दी पढ़नेवाले केवल छात्र-अध्यापक, पाठक, कवि, साहित्याकर ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान हैं इस संदर्भ में यह बात बहुत उल्लेखनीय है कि अमेरिकन यूरोपियन विद्वानों का संस्कृत भाषा के प्रति कुछ विशेष आकर्षण है जिसके कारण अंग्रेजी, फ्रांसिसी, जर्मनी और रुसी भाषा के विद्वनों ने संस्कृत में रचे साहित्य जैसे कि रामायण, महाभारत, उपनिषद् इत्यादि ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद कर डाला । वैसे भी हिन्दी संस्कृत भाषा की सर्वोच्च उत्कृष्ट उत्तराधिकारिणी है । डॉ. जॉर्ज अग्रसेन ने कहा कि संस्कृत की बेटियों में हिन्दी सबसे अच्छी और शिरोमणि है । संस्कृत भाषा की समृद्ध और लोकप्रिय पृष्ठभूमि को प्राप्त करने के बाद हिन्दी को विश्व में अपना स्थान बनाने के लिए किसी विशेष संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि हिन्दी के लिए पूर्व से ही भाव - भूमि व आधार - भूमि दोनों ही उपलब्ध थे । कुछ वांछित कमियां और राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव के कारण आज हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की सरकारी भाषा नहीं बन सकी । हिन्दी

भाषा राजभाषा होने के बाद भी 60 साल से अधिक समय से राष्ट्रभाषा बनने की प्रतीक्षा कर रही है । हिन्दी सर्वगुण संपन्न होने के बाद भी यदि उसके साथ बेरहमी और इस तरह का व्यवहार हो तो इसे हम यह करने के लिए सनातन धर्म, आर्य समाज और कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं ने इन क्षमिकों को इसका नसीब ही खोटा है ।

विश्व के साहित्यकारों, लेखकों की हिन्दी भाषा के प्रति कोई दृष्टि विहिनता या अनदेखी नहीं पाई गई परंतु खेद इस बात का है कि हमारे साहित्यकार विद्वान और अहिन्दी भाषा - भाषी साहित्याकर की अवहेलना करने में ही अपना गौरव समझते हैं । हिन्दी साहित्य के इतिहास में यदि देखें तो केवल हिन्दी क्षेत्र की हिन्दी प्रगति का ही विवरण दिया है । यहाँ तक उसमें उनकी बोलियों का उल्लेख भी नहीं किया। दक्षिण भारत की दक्खिनी, हिन्दी का गढ़ कही जाने वाली, जिनके वैज्ञानिकों ने हिन्दी साहित्य का भंडार को भरने के लिए अपना खून-पसीना एक कर डाला । उनका उल्लेख भी हिन्दी साहित्य के इतिहास में न करना एक घोर पाप है, उनके अवदानों का अवमूल्यन है । विदेशी विद्वानों एवं साहित्यकारों की इस तरह से अनदेखी करना हिन्दी के लिए अच्छा साबित नहीं होगा । बेहतर यह होगा कि समय रहते ही इन्हें साथ लेकर चले तभी विश्व में हिन्दी का भविष्य उज्जवल रहेगा ।

आज विश्व हिन्दी कोश में विद्वानों द्वारा अपने लोकभाषीय संग्रह को प्रस्तुत करना और विश्व कोश में हिन्दी शब्दों के समावेश से एक नया आयाम मिला है । आज विश्व में 44 से भी अधिक देशों के लगभग 4 अरब की जनसंख्या के लगभग 19% से 20% लोग हिन्दी जानने वाले हैं ।

मनोरंजन की दुनिया में विश्व - हिन्दी को एक और सुनहरा अवसर मिला है जिसमें आज विज्ञापन युग में प्रतिद्वंदिता एवं गला - काट व्यापार नीति के कारण बड़े-बड़े होर्डिग्स, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, चलचित्र, मोबाइल इत्यादि के माध्यम से हिन्दी भाषा को अंग्रेजी - रोमन शब्दों में सिखाने का अभियान चल रहा है । जैसे कि - यही है राइट च्वायस बेबी । इस बारे में चिंता करने की जरुरत नहीं है कि लोग आज अंग्रेजी के माध्यम से हिन्दी सीख रहे हैं । इसमें हमें संकुचित दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए । विश्व हिन्दी के लिए यह शुभ-संकेत है कि आज अंग्रेजी - हिन्दी भाषा की दासी बन चुकी है और इसकी बैसाखी बनकर इसका अनुचर कर रही है ।

- नीरज पाल
निरीक्षक

"हिन्दी एक संगठित करनेवाली शक्ति है। हिन्दी का प्रचार कार्य एक वाज्यज्ञ है ।"

- काका साहिब गाडगिल

"हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है।"

- राहुल सांकृत्यायन

आइए हिन्दी में काम करें

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय, अहमदाबाद-II

सीमा शुल्क सदन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009.

फा.सं.II/27-01/2008-स्थापना अहमदाबाद, दिनांक .....

सेवा में,
अपर आयुक्त (सी.सी.ओ.),
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
अहमदाबाद ।

महोदय,

विषय : स्थापना: माह ..... के सभी समूहों की स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की स्थिति ।

कृपया अपना उक्त विषयक पत्र फा.सं.II/27-01/सी.सी.ओ./2005 दिनांक: 01-01-2008 का अवलोकन करें ।

2. कृपया इसके साथ इस आयुक्तालय की स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की स्थिति बताने वाला विवरण प्राप्त करें । माह ..... के लिए मासिक प्रशासनिक रिपोर्ट आवश्यक कार्यवाही के लिए प्राप्त करने का कष्ट करें ।

अपर आयुक्त (का. व स.)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

संलग्नक: यथोपिर
प्रतिलिपि प्रेषित:

1. संयुक्त आयुक्त (का. व स.), केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, वडोदरा-I.

टिप्पणी पृ.सं. 1

फा.सं. IV/18- ओआईओ/08 - आरए

विषय : मेसर्स ..... अहमदाबाद द्वारा दाखिल रीबेट दावों के मामले में सहायक आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, मण्डल – द्वारा पारित मूल आदेश।

Sub : O-In-O passed b the Assitant Commissioner, C.Ex., Division - Ahmedabad - II in the case of rebate claims filed by M/s..... Ahmedabad - Review thereof.

प्रस्तुत है :-

Submitted Please :-

कृपया केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली 2002 के नियम 18 के अन्तर्गत मेसर्स ..... अहमदाबाद द्वारा दाखिल रीबेट दावों के मामले में सहायक आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क मण्डल – अहमदाबाद – II द्वारा पारित निम्नलिखित मूल आदेश का अवलोकन करें। उक्त दावाकर्ता एक ..... निर्यातक है।

Please peruse the following OIO passed by the Assitant Commissioner, Central Excise, Division - , Ahmedabad - II in the case of rebate claims filed by M/s. ..... Ahmedabad, under Rule 18 of the Central Excise Rules, 2002. The said claimant is a ..... exporter.

क्रम सं. Sr. No.	मूल आदेश संख्या OIO No.	दिनांक Date	रीबेट दावा Rebate Claimed	स्वीकृत रकम Sanctioned Amount	आरजी 23ए भाग – II में जमा Credit in RG23 - A Pt-II

ऊपर बताए गए मूल आदेशों की जांच करने पर, यह पाया गया है कि मूल आदेशों को पारित करते समय सहायक-आयुक्त ने निम्न पर सही विचार किया है :-

On examination of the above mentioned OIOs, it is seen that while passing the OIOs the A.C. has correctly considered that :

(क) उक्त दावा निर्धारित समय सीमा के भीतर दाखिल किया गया था।

(a) The Claim was filed within the stipulated time - limit.

(ख) माल पर शुल्क का भुगतान किया गया है।

(b) The duty has been paid on the goods.

(ग) माल निर्यात किया गया था एवं निर्यात का सबूत दावाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए थे और जो नियमानुसार पाए गए हैं।

(c) The goods were duly exported and proof of export has been submitted by the claimant and which has been found to be in order.

ऊपर बताए गए मूल आदेशों की उप-आयुक्त (लेखा परीक्षा) द्वारा पश्च लेखा परीक्षा (पोस्ट ओडिट) भी की गई हैं।

The aove mentioned OIOs have also been post - audied by the Deputy Commissioner (Audit.)

ऊपर बताए गए मूल आदेशों की आदेश की वैधता एवं औचित्यता तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम एवं नियामवली के संबंधित प्रावधानों के बारे में जाँच की गई है और ये वैद्य एवं योग्य पाएं गए हैं। कृपया इन्हें आयुक्त द्वारा स्वीकृत किया जाए।

The above mentioned OIOs have been examined regarding the legality and properiety of the order vis-a-vis relevant provisions of Central Excise Act and Rules, and the same is found to be legal and proper. The same may be accepted by the Commissioner.

आयुक्त का कार्यालय, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क
मुख्यालय, तकनीकी अनुभाग : अहमदाबाद-II
प्रथम मंजिल, सीमा शुल्क सदन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

फा.सं. दिनांक :

मेसर्स .....
.....
.....
.....

महोदय,

विषय : आपके द्वारा निष्पादित बी - 1 बंध पत्र की वैधता समाप्त के बारे में ।

Sub : Expiry of Validity of B-1 Bond executed by you : reg.

सदर्भ : बंध पत्र सं. बी1/सा. प्रतिभू/ /200 - 200 :रु.....
Ref. : Bond No. B1 / Gen. Sec. / / 200 - 200 for Rs. .....

इस संबंध में आपको सूचित किया जाता है कि उक्त उल्लिखित बंधपत्र के संबंध में इस कार्यालय द्वारा जारी बंध - पत्र मेमो की वैधता अवधि समाप्त हो चुकी है । आपसे अनुरोध है कि पत्र प्राप्ति के बाद एक सप्ताह के अन्दर इस कार्यालय से संपर्क करें ।

आपको एतद् द्वारा निदेश दिए जाते हैं कि निर्धारित समय सीमा के अन्दर उक्त बंध पत्र (बाण्ड के प्रति आपको जारी किए गए सी टी 1 के संबंध में निर्यात का सबूत प्रस्तुत करें । यदि आप निरधाति समय - सीमा के अंदर निरार्यत का सबूत प्रस्तुत करने से असमर्थ है तो केन्द्रीय उत्पाद शुल्क मैनुअल के अध्याय 7 के भाग II के अनुच्छेद 6.2.13.5 एवं 16.6 के अनुसार इसमें शामिल शुल्क ब्याज सहित तत्काल जमा किया जाए अन्यथा आपके विरुद्ध दण्डनीय कार्यावाही शुरु की जाएगी ।

भवदीय,

सहायक आयुक्त (निर्यात)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (मु.)
अहमदाबाद - II

वर्ष - **2008** के दौरान दिनांक **10** एवं **11** सितंबर - **2008** को आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का मुआइना कर रहे उच्च अधिकारी-गण एवं हिस्सा ले रहे प्रतिभागीगण

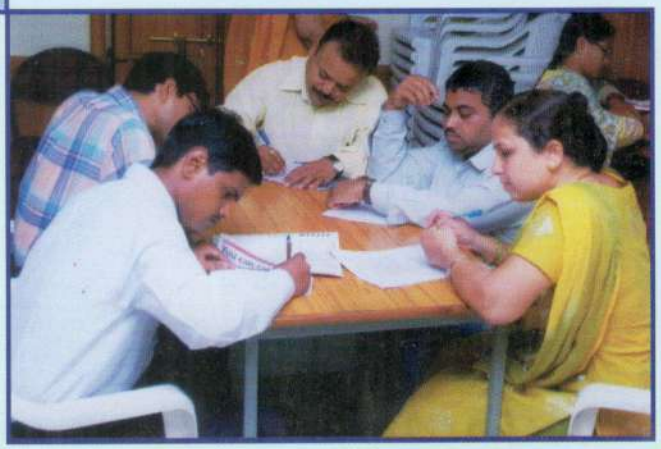

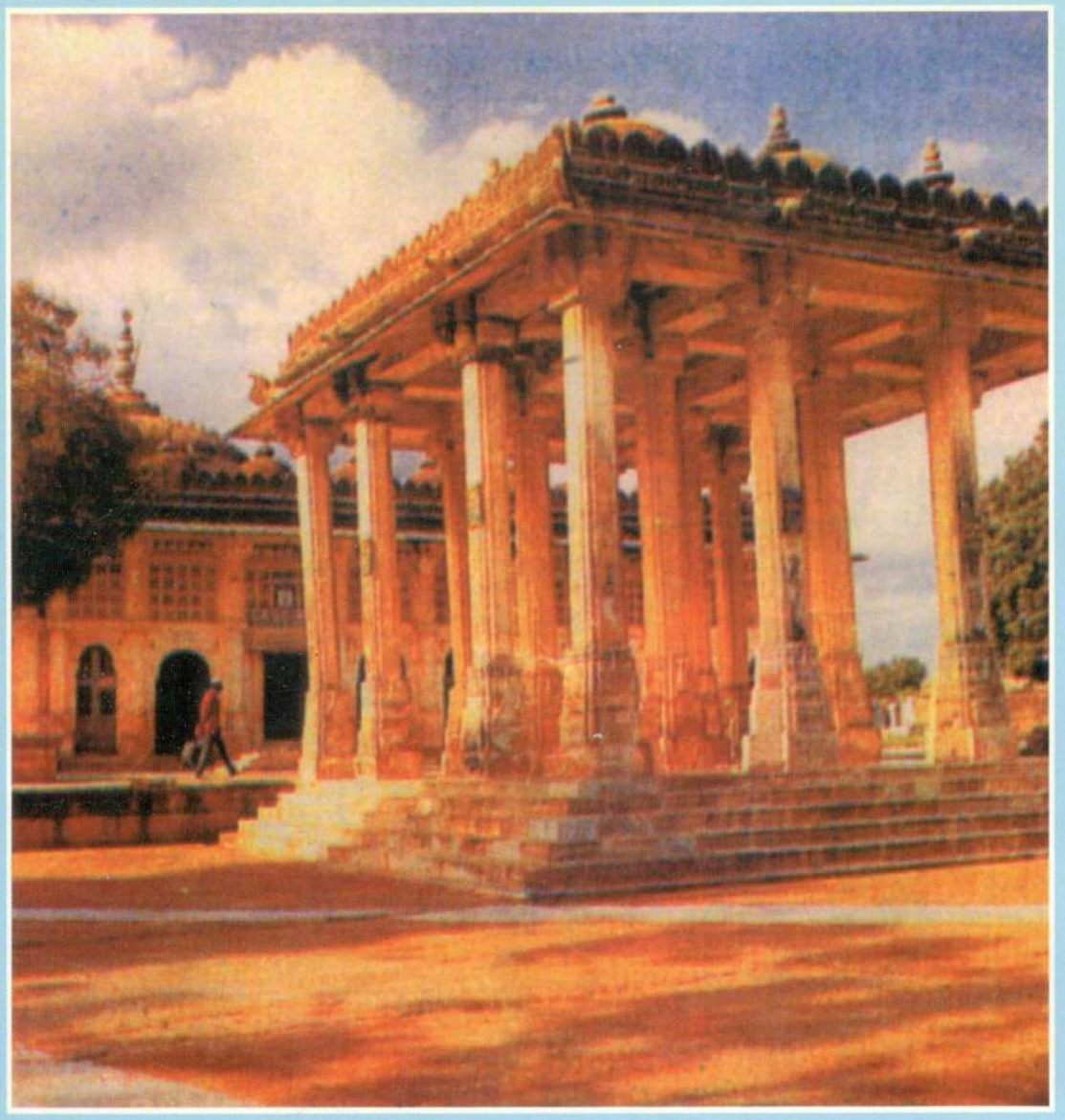

सरखेज़ रोज़ा - अहमदाबाद.

मुद्रक : नीलमणि प्रिन्टर्स, पूनाजी एस्टेट, घोबीघाट, अहमदाबाद-380 004. फोन : 25621116